'वरनत छवि श्याम सुंदर...'

श्रीराम सेंटर में शिष्या महुआ शंकर का नृत्य देखकर पंडित बिरजू महाराज ने माना, 'उसमें एक सफल नृत्यांगना बनने की सभी खूबियां हैं।' वाकई?

कला के क्षेत्र में एक मुकाम ऐसा भी आता है, जब शिष्य 'गुरु' का दर्जा प्राप्त कर लेते हैं। कथक सम्राट पंडित बिरजू महाराज के अनेक शिष्य-शिष्याओं को गुरु का दर्जा प्राप्त हो चुका है, लेकिन अब भी कुछ युवा शिष्य स्वयं को स्थापित करने के लिए कड़ा संघर्ष कर रहे हैं। ऐसी ही एक नृत्यांगना है, महुआ शंकर, जो इन दिनों अपने को स्थापित करने के लिए कड़ी मेहनत कर रही है। श्रीराम सेंटर में आयोजित एक कार्यक्रम में महुआ की प्रस्तुति देखकर अहसास हुआ कि यह संघर्ष-यात्रा एक दिन जरूर रंग लाएगी। पंडित बिरजू महाराज व उनकी वरिष्ठ शिष्या शाश्वती सेन, दोनों महुआ का नृत्य देखने पहुंचे। नृत्य की शुरुआत में महुआ ने 'वरनत छवि श्याम सुंदर..' वंदना से की। इसके बाद उन्होंने विलंबित तीन ताल, आमद, ठाठ, उठान, परन आदि पर नृत्य किया, फिर सात मात्रा की रूपक ताल में परमेलू, टुकड़े और तिहाइयों पर महुआ ने अपने अभिनय और फुटवर्क का कमाल दिखाया।

नृत्यांगना महुआ शंकर

पंडित बिरजू महाराज ने कहा, 'महुआ के बारे में जितना कहें, कम है। उसमें एक सफल नृत्यांगना बनने की सभी खूबियां

नृत्य

है। वैसे तो, शुरुआती दौर का संघर्ष सभी को करना पड़ता है, लेकिन युवा कलाकारों को बढ़ावा देने के लिए इस तरह के अभियान काफी सहायक साबित हो सकते हैं।' महुआ ने कहा, 'अब तक जो सीखा, वह गुरु की कृपा से ही। बचपन में मां और पिताजी से नृत्य सीखने के बाद गुरु रेबा विद्यार्थी और भाश्वती मिश्रा से कथक की शिक्षा ली। फिर पंडित कथक केंद्र में पंडित बिरजू महाराज से सीखने का अवसर मिला। मैं चाहती हूं कि उनका आशीर्वाद हमेशा मुझ पर बना रहे। वे एक अच्छे गुरु होने के साथ-साथ अच्छे इंसान भी हैं। उनकी सबसे बड़ी खूबी है कि वे गुरु-शिष्य के रिश्ते को निभाने के साथ दोस्त, भाई और पिता जैसे भी बन जाते हैं।'

वी. गुप्ता

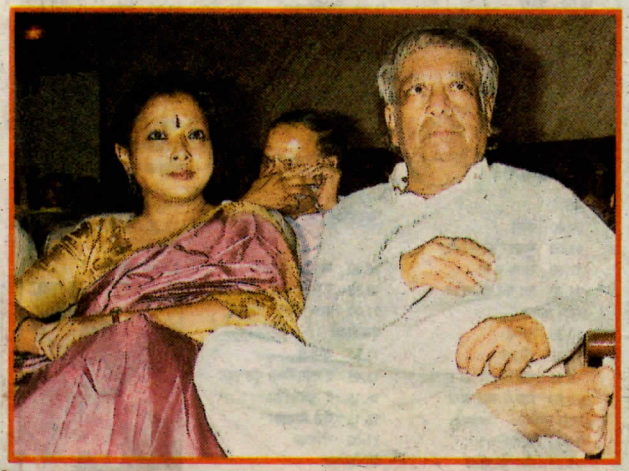

शाबाश महुआ : शाश्वती सेन व पंडित बिरजू महाराज फोटो : भूपिंदर सिंह